E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

मनस् (शिवसंकल्प) देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

शुक्ल-यजुर्वेद के ३८वें अध्याय में यह सूक्त प्राप्त होता है। इसमें ऋषि अपने मन को कल्याणकारी सङ्कल्पों से युक्त होने की कामना करता है। मनोविज्ञान में मन को जीवन का एक अनिवार्य तत्त्व स्वीकार किया गया है। मन के द्वारा ही सभी कर्मेन्द्रियाँ एवं ज्ञानेन्द्रियाँ अपने-अपने विषयों को ग्रहण करने में समर्थ होती हैं। इसीलिए भारतीय दर्शनों में मन को उभयेन्द्रिय माना गया है। मन के द्वारा ही अप्रमेय एवं ध्रुव सत्य का दर्शन होता है-'मनसैवानुद्रष्टव्यमेतदप्रमेयं ध्रुवम्'।

मन प्राणियों के अन्तःकरण में विद्यमान अमृत ज्योति स्वरूप है। इसके बिना किसी कार्य का सम्पादन नहीं किया जा सकता है। मन देवता के द्वारा भूतकालीन, वर्तमानकालीन एवं भविष्यत्कालीन सब कुछ भलीभाँति ज्ञात किया जाता है। इसी के द्वारा सात होताओं से युक्त यज्ञ सम्पादित किया जाता है। इसी मन के अन्तर्गत ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद के मन्त्र प्रतिष्ठित हैं। इसमें प्राणियों का सारा ज्ञान अनुस्यूत है। यह जरारहित और अत्यन्त वेगशाली है।

मन के कार्य- प्रस्तुत सूक्त में वर्णित मन के कार्यों को इस प्रकार प्रतिपादित किया जा सकता है-मन जाग्रदवस्था में क्षणमात्र में अति दूर गमन कर सकता है तथा दूसरे ही क्षण प्रत्यागमन भी कर सकता है। दूरगामी शक्तियों में सर्वशक्तिमान् मन ही है। मन के द्वारा ही सभी प्रकार के यज्ञ आदि सम्पन्न किये जाते हैं। जिस प्रकार रथ की नाभि में 'आरे' (तीलियाँ) प्रतिष्ठित होती हैं उसी प्रकार ऋक्, यजुष् एवं साम मन के अन्तर्गत ही प्रतिष्ठित होते हैं। मन ही सात होता से युक्त यज्ञ का विस्तार भी करता है। जिस प्रकार चतुर सारथि लगाम के द्वारा घोड़ों को नियन्त्रित करता है उसी प्रकार मन मनुष्यों को सञ्चालित करता है।

शिवसङ्कल्प का महत्त्व- प्रस्तुत सूक्त ऋग्वेद के खिल भाग में भी प्राप्त होता है। वहाँ पर इस सूक्त में १३ ऋचाएँ हैं। खिलानुक्रमणी में इस सूक्त को शिवसङ्कल्प नाम दिया गया है। अग्निपुराण में इस सूक्त के जप से मन के शान्त होने का विधान किया गया है-

शिवसङ्कल्पजापेन समाधिं मनसो लभेत्।

येनेदमिति जप्त्वा समाधिं विन्दते परम् ।।

मनुस्मृति में शिवसङ्कल्पसूक्त को पापहारी बतलाया गया है, तथा टीकाकार मेधातिथि ने भी श्राद्ध के समय इस सूक्त के पाठ का विधान किया है- 'खिलानि श्रीसूक्तशिवसङ्कल्पादीनि श्राद्धे ब्राह्मणान् श्रावयेत्'।

प्रस्तुत सूक्त में मन के शुभ सङ्कल्पों से युक्त होने की कामना की गयी है। यदि व्यक्ति का मन शुभसङ्कल्पों से युक्त होगा तो उसे इस जीवन में किसी प्रकार के दुःख का सामना नहीं करना पड़ेगा; क्योंकि सभी दुःखों का मूलकारण मन की असन्तुष्टि ही है।

मन के द्वारा ही कर्मनिष्ठ, मेधावी तथा धीर लोग यज्ञ में एवं यज्ञ के विधि-विधानों में कर्म करते हैं। यह उत्कृष्ट ज्ञान जा जनक है। यह धैर्य का आधार स्वरूप है।